ISSN - 2231-1130
वर्ष–सप्तम् ; सितम्बर–2016

अर्वाचीन संस्कृत काव्यशास्त्र में काव्यलक्षणविमर्श

डॉ0 सुप्रिया टण्डन*

अर्वाचीन संस्कृत काव्यशास्त्र में काव्य की अवधारणा संस्कृत काव्यशास्त्रियों के गम्भीर चिन्तन का विषय हो गया है। काव्य क्या है? इस सन्दर्भ में अर्वाचीन संस्कृत काव्यशास्त्र के नवीन परिदृष्य दृष्टिगत हो रहे हैं। आचार्य भरत से लेकर आचार्य जगन्नाथ ने काव्यचिन्तन की स्थूल प्रकृति पर विचार व्यक्त किये परन्तु आज परिवर्तन दृश्टिगत हो रहा है। अर्वाचीन संस्कृत के प्रख्यात संस्कृत काव्यशास्त्रीय आचार्य रेवा प्रसाद द्विवेदी, डा0 ब्रह्मानन्द शर्मा, आचार्य शिव जी उपाध्याय, अभिराज राजेन्द्र मिश्र, आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी, आचार्य रहसविहारी द्विवेदी आदि ने अभिनव काव्यलक्षण सन्दर्भ में नवीन शैली में विचार प्रस्तुत किये हैं। यद्यपि इन समस्त अर्वाचीन काव्यशास्त्रीय आचार्यों के सम्मुख पूर्ववर्ती आचार्यों के चिन्तन का निष्कर्ष है जिससे काव्य क्या है इसको व्यक्त करने में सहायता प्राप्त हुयी है। काव्यात्मविवेचन सन्दर्भ में आचार्य रेवा प्रसाद द्विवेदी ने अपने काव्यग्रन्थ काव्यालंकारकारिका में स्पष्टतः कहा है –

आनन्दकोशस्योल्लासे लोकोत्तरविभावना।
अलङ्.कृतार्थसंवित्ति शाब्दी काव्य प्रकीर्त्यते।। [1]

आचार्य द्विवेदी ने काव्य को अलंकृतार्थ संवित्ति के रूप में विवेचित किया हैं **'अलं'** शब्द ब्रह्मा का वाचक है। ब्रह्म आनन्दयुक्त होता है जिससे ब्रह्मनुभव प्राप्त हो वह संवित्ति काव्य है। अग्निपुराण में 'अलं' शब्द ब्रह्म शब्द का पर्याय कहा गया है। इस प्रकार आचार्य द्विवेदी ने अलं तत्व को काव्य की आत्मा कहा है। उन्होंने काव्यजनित सामान्य सौन्दर्य तथा सौन्दर्य के हेतुभूत गुण, अलंकार, रीतिवृत्ति आदि समस्त धर्मों को अलंकार मानते हुये लिखा है–

* 2/356, जानकीपुरम विस्तार, लखनऊ।

अलम्भावो ह्यलङ्कारः स च सौन्दर्यतत्कृतोः।
विभक्तात्मा विभुर्जीव ब्रह्मणोश्चिद्घनो यथा।। [2]

आचार्य रेवा प्रसाद द्विवेदी ने अलंकृत शब्दार्थ समष्टि को काव्य की संज्ञा दी है। सनातन कवि का काव्यलक्षण आचार्य भामह की काव्यदृष्टि का समर्थन करता परिलक्षित होता है। काव्यसौन्दर्य के हेतु रस, छन्द, गुण, रीतिवृत्ति इत्यादि अलंकार के अन्तर्गत समाहित है ऐसा आचार्य द्विवेदी ने काव्यालंकारकारिका में स्वीकृत किया है।

आचार्य ब्रह्मानन्द शर्मा ने यद्यपि शब्दार्थसमष्टि को काव्य कहा है तथापि नवीन मत का प्रतिपादन करते हुए शब्दार्थ में सत्य के रमणीय प्रतिपादन को काव्य कहा है –

शब्दार्थवर्तिसत्यस्य सुन्दरं प्रतिपादनम्।
काव्यस्य लक्षणं ज्ञेयं सत्यस्यमात्र विशेषता।। [3]

सत्यान्वेषण उनका प्रमुख लक्ष्य है। काव्य की आत्मा सत्यानुभूति को माना है। उनका मन्तव्य है कि सत्य अनुभूति यथार्थ अनुभूति है यह अनुभूति जितनी सूक्ष्म होती है उतनी ही चमत्कारिणी है। यही चमत्कारिणी सत्यानुभूति काव्य की आत्मा है।

शब्दार्थसमष्टि को काव्यलक्षण के रूप में उन्होंने भी स्वीकार किया है –

सत्यमर्थगतं काव्ये, अर्थे शब्दस्य संस्थिति ।
शब्दार्थयोर्हि सद्भावात् अस्य साहित्यरूपता ।। [4]

आचार्य ब्रह्मानन्द शर्मा ने काव्यसत्यालोक में सत्य को अभिनव तत्व के रूप में परिभाषित किया जो कि नवीन है। उनका मानना है कि सत्य ऐसा तत्व है जिसमें शब्द, अर्थ, अलंकार, व्यज्जना, रस, गुण आदि समस्त तत्वों का अन्तर्भाव हो जाता है।

अभिनव काव्यशास्त्रीय आचार्य शिव जी उपाध्याय ने अपने काव्यग्रन्थ **'साहित्यसन्दर्भ'** में मन्तव्य प्रस्तुत किया।

यदर्थ सस्पृहं लोको यदाप्तुं परमोत्सुकः।
यदाप्य परिभुज्यापि सोत्कण्ठस्तद्धि सुन्दरम्।। [5]

समाज जिसे प्राप्त की इच्छा रखता है, उसे प्राप्त करने के लिए उत्सुक होता है और जिसे प्राप्त करने के पश्चात् भी उत्कण्ठित होता है वह सुन्दर है।

उनका मानना है कि सौन्दर्याधायक काव्य की ही प्रतिष्ठा है और इसके अतिरिक्त सम्पूर्ण शास्त्र अनर्थ है।

सौन्दर्याधायकं काव्यसाहित्यं चेत्प्रतिष्ठितम्।
तद्न्यन्निखिलं शास्त्र किमग्राहमसुन्दरम्।।
नेतुदुह्म यतश्शास्त्रोच्चयस्तत्वप्रमाणकः।
काव्यसाहित्यमेकान्त सौन्दर्यज्ञान साधनम्।। [6]

आचार्य उपाध्याय जी का मानना है कि निस्यन्दित होते हुए रस से ओतप्रोत, गुणों और अलंकारों से युक्त, दोषों से रहित, भावों से भूयष्ठि काव्य साहित्य ही सुन्दर तत्व है –

निर्गलद्रसनिव्यूढं गुणालंकारसञ्चितम्।
निर्दुष्टं भावभूयिष्ठं काव्यसाहित्यमेव तत्।। [7]

अभिराजयशोभूषण में अभिराज राजेन्द्र मिश्र ने काव्यलक्षण प्रस्तुत किया –

काव्यं लोकोत्तराख्यानं रसगर्भः स्वभावजम्।। [8]

लोकोत्तर, रसगर्भ तथा स्वभावज को काव्य कहा जाता है। यहां आख्यान शब्द अभिव्यक्ति का परिचायक है। काव्यलक्षण में अभिराज राजेन्द्र मिश्र ने शब्दार्थ शब्द के स्थान पर आख्यान शब्द प्रयुक्त किया है। लोकोत्तर, रसगर्भ, स्वभावज आख्यान के तीन विशेषण कहे गये हैं। यदि आख्यान रसात्मक तथा रमणीय होता है तभी काव्य लोकोत्तर कहा जाता है ऐसा विचार है अभिराज राजेन्द्र मिश्र का।

सगुणत्वमदोषत्वं निश्प्रयत्नाऽप्यलङ्कृतिः।
प्रज्ञा चापि नवोन्मेषा लोकोत्तरत्वकारणम्।। [9]

अभिराज राजेन्द्र मिश्र ने अपने काव्यलक्षण के माध्यम से पूर्ववर्ती आचार्य मम्मट, आचार्य विश्वनाथ, पण्डितराज जगन्नाथ के काव्यविषयक विचारों को व्यक्त किया है।

अभिराज राजेन्द्र मिश्र के अनुसार सगुणत्व, अदोशत्व, सालंकारत्व तथा प्रतिभाजन्यत्व आदि गुणों से काव्य लोकोत्तर सिद्ध होता है इन समस्त गुणों के कारण काव्य सामान्य ग्राम्यकथन की तुलना में विलक्षण प्रतीत होता है। ग्राम्यकथन में न माधुर्यादि गुण होते है न ही हृदयावर्जक शब्दों तथा अर्थो के अलंकार होते हैं। उनमें न ही श्रुतिकटु नेयार्थादि दोषों का अभाव संभव होता है। उन ग्राम्य कथनों में प्रतिभा संस्पर्श का विलास भी नही होता है।

उपर्युक्त काव्यलक्षण कुछ नवीनता के साथ प्राचीन आचार्यों द्वारा कथित काव्यलक्षण का समर्थन करता है।

अर्वाचीन काव्यशास्त्रीय आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी ने **'अभिनवकाव्यालंकारसूत्र'** में काव्यलक्षण विषयक विचार प्रस्तुत करते हुए कहा –

लोकानुकीर्तनं काव्यम्।।[10]

उनके अनुसार केवल स्थावरजंगमात्मक संसार नहीं है अपितु कविचेतना के द्वारा विभाव्यमान समस्त भुवन लोक है। ऐसा प्रतीत होता है कि आचार्य भरत के लोकानुकीर्तन का अनुकरण करते हुए उन्होंनें काव्य को परिभाषित किया है।

लोक के तीन रूप माने है – आधिभौतिक, आधिदैविक, आध्यात्मिक। आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी ने तीनों के समग्र समुल्लास को जीवन कहा है। इन तीनों रूपों के रहने पर काव्य की रचना होती है। काव्यलक्षण में प्रयुक्त अनुकीर्तन की चार अवस्थाओं पर आधुनिक काव्यशास्त्री आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी ने विचार व्यक्त किए है –

अनुन्मीलन, अनुदर्शन, अनुभव, अनुव्याहरण।

उनका विचार है कि अनुन्मीलन, अनुदर्शन, अनुभव, अनुव्याहरण के

विनियोग से आधिभौतिक, आधिदैविक और आध्यात्मिक विश्व काव्य में परिपूर्ण रूप से व्यक्त होते हैं। यही काव्य की पूर्णता कहलाती है। यही अलंकार है। अतः अलंकार ही काव्य है।

इस प्रकार आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी ने लोकानुकीर्तन को काव्य मानते हुए उसकी संगति अलम्भाव से सम्बद्ध की है।

आचार्य रहसविहारी द्विवेदी कृत नूतन काव्यशास्त्रीय रचना **'नव्यकाव्यतत्वमीमांसा'** में आधुनिक परिवेश पर विचार करते हुए लिखा है –

लोकोत्तर ह्रदयाह्लादे लोकोद्बोधे च संगता।
प्रज्ञावतः कवेः, सद्वाक् काव्यमित्यमिधीयते।।

अर्थात् लोकोत्तर, ह्रदयाह्लाद तथा लोकोद्बोधन में संगत प्रज्ञावान कवि के सद्वाक को काव्य माना गया है।

उपर्युक्त नवीन काव्यलक्षण की समीक्षा से यह ज्ञात होता है कि आधुनिक काल में अनेक काव्यशास्त्रीय प्रधान ग्रन्थों का आविर्भाव हुआ। अर्वाचीन युग में भी काव्यशास्त्र के प्रतिनिधि विद्वान् विराजित है। उनके अथक् प्रयासों से आधुनिक काव्यशास्त्र का उत्थान दृष्टिगत होता है।

प्राचीन परम्परा की तुलना में अभिनव काव्य परम्परा लघु नहीं है अपितु नित्य नूतन काव्यग्रन्थों की रचना की जा रही है। इस प्रकार संस्कृत काव्यपरम्परा लोकप्रिय प्रासांगिक दृष्टिगत होती है। संस्कृत काव्यशास्त्र परम्परा पण्डितराज के साथ समाप्त नहीं हुयी है अपितु आधुनिक युग में विद्यमान है। अभिनव काव्यशास्त्र में अभिनव काव्यशास्त्रियों का चिन्तन साधु है।

सन्दर्भ –

1. काव्यालंकारकारिका –1
2. वही, 48
3. काव्यसत्यालोक – 15

4. वही, पृ0 – 1
5. साहित्यसन्दर्भ – 5
6. वही, 5. 10, 5. 11
7. वही, 5. 7
8. अभिराजयशोभूषण – 34
9. वही, 37
10. अभिनवकाव्यालंकारसूत्र – 1.1